मेरा पन्ना

प्रज्ञा, पहली, दिल्ली

# मुझे याद है वह दिन...

मखमली आकाश के घनघोर अन्धेरे में
टिमटिमा रहे थे तारे
जैसे किसी दुश्मन को हरा आए हों।
हवा में
कुछ सुर्ख लाल रंग के अंगारे
अब भी तैर रहे थे।

मैं और मेरा परिवार
बैठे आसमां तले
खुश और भाव-विभोर
इन पलों में भी कोई
कराह रहा था किसी छोर।

उस निष्ठुर कमरे में
नानू बेचारे
खाँस रहे थे, हाँफ रहे थे
कुछ आखिरी साँसों के सहारे
ज़िन्दगी की जंग में थे

मैं फोन पर चीखी थी – भेजो जल्दी एम्बुलेंस
देर हो गई थी
अस्पताल भी ले गए
पर...
गुज़र चुके थे नानू

यह दुख से भरी खबर सुन
मेरी आँखों से निकली थी अश्रुधार
मैं खुद से ही रही पूछती
यह सब कैसे हुआ

मेरा दिल टूट रहा था
मैं इसके टूटने को सुन रही थी
आवाज़ भी मैं सुन रही थी
कभी खत्म न होने वाली धक-धक
वह दिन आज भी याद है, हाँ याद है...

काव्या गोपाल, सातवीं, गुड़गाँव, हरियाणा
(अँग्रेज़ी में प्राप्त हुई कविता का अनुवाद।)

# हमारी प्यारी बिल्ली

हमारे घर में प्यारी-सी बिल्ली रहती है। जब मैंने पहली बार बिल्ली को देखा तो वो बहुत मोटी थी। मैंने सोच लिया कि मैं इस बिल्ली को पाल लूँगा। फिर मैं फटाक से रसोई में गया और एक कटोरा दूध गरम किया और एक रोटी तोड़कर जल्दी से बिल्ली को दे दिया। जब उसने दूध और रोटी खा ली और वहीं बैठ गई, मैं उसके पास गया। तो वो भाग गई। तो फिर मैं घर में चला गया।

जब शाम को पापा घर आए तो मैंने उनको बताया कि पापा आज बाहर बिल्ली आई थी, वो बहुत मोटी थी। मैंने उसको एक कटोरा दूध और एक रोटी तोड़ के दी खाने को। जब मैं उसके पास गया तो वो भाग गई। पापा इस बिल्ली को मैं पाल लूँ। पापा ने कहा, "पाल लो बेटा।"

वो दिन बीत गया। जब मैं सबेरे उठा तो मैंने देखा कि वो मोटी बिल्ली पतली हो गई। जब मैं उसके पास गया तो मैंने देखा की तीन बच्चे उसके पेट के पास बैठे थे। जब बिल्ली ने मुझको देखा तो उसने म्याऊँ-म्याऊँ बोलना शुरू कर दिया। मैं जल्दी से अन्दर गया और पापा को बोला, "पापा वो देखिए मोटी बिल्ली के तीन बच्चे उसके पेट की बगल में बैठे हैं।" पापा ने कहा कि जल्दी से बिल्ली और बिल्ली के बच्चों को दूध दो। मैंने कहा, "ठीक है पापा।" मैं रसोई में गया और मैंने दो कटोरा दूध गरम किया और एक कटोरा दूध बिल्ली को दिया और एक कटोरा दूध बिल्ली के बच्चों को दिया। फिर बाद में जाकर मुझको पता लगा कि बिल्ली इसलिए मोटी हुई थी क्योंकि उसके पेट में तीन बच्चे थे। जब बिल्ली के बच्चे बड़े हो गए तो वो हमेशा के लिए अपनी माँ के साथ चले गए।

आदित्य सिंह, जालन्धर, पंजाब

शुभम पटेल, पता नहीं लिखा

विदुषि, पाँचवी, टोंक, राजस्थान

शिवम, छठवीं, कानपुर, उ. प्र.

हिमांगी, उम्र सात साल, लखनऊ, उ. प्र.

# मेरी नोट बुक

हम कोलकाता शहर में रहते हैं। यहाँ रिक्शे ज़्यादा चलते हैं। हमारा छोटा-सा घर है। इसमें दो कमरे हैं। लकड़ी के पार्टिशन से बने। वहीं एक कोने में मम्मी की रसोई है, जहाँ से उनकी चूड़ियों की आवाज़ जब-तब आती रहती है।

बाबा दिन भर रिक्शा चलाते हैं, जिससे उनके चेहरे पर 50 साल की उम्र में ही झुर्रियाँ आने लगी हैं। शरीर साँवला पड़ गया है। हाथ हैंडिल को पकड़े-पकड़े सख्त हो गए हैं, जिनका एक चाँटा लगने पर इन्सान घूमता नज़र आता है। बाबा पूरा दिन रिक्शा चलाकर जितना भी पैसा कमाते हैं, उससे घर का, भैया और मेरी पढ़ाई का खर्च निकलता है।

जब कभी बाबा थकान महसूस करते हैं तो भी यह सोचकर रिक्शा चलाते हैं कि अगर मैं एक दिन भी रिक्शा नहीं चलाऊँगा तो घर का खर्च कैसे चलेगा। उस दिन बाबा छुट्टी नहीं करते, बल्कि शाम को जल्दी आ जाते हैं।

मम्मी पापा के पैसों को ध्यान से घर में खर्च करतीं हैं। कभी-कभी कुछ परेशान-सी लगती हैं। उनकी सिकुड़ी भौंहें यह कहती हैं कि घर कब तक यूँ ही चलेगा। अब तो उनके खिले चेहरे व आँखों के नीचे काले निशान आने लगे हैं।

भैया कॉलेज में पढ़ते हैं और मैं 11 वीं कक्षा में। हमारी सुबह चिड़ियों के चहचहाने से होती है तथा रात चर्च के घण्टे से। भैया ज़्यादा लम्बे नहीं हैं पर कुछ भरे बदन के हैं। वो भी बाबा का बोझ कम करने के लिए पार्ट-टाइम जॉब करते हैं। जिससे कम से कम अपनी पढ़ाई का खर्च कुछ तो स्वयं उठा सकें। पर बाबा ज़्यादा से ज़्यादा मेहनत करके भैया को पढ़ाना चाहते हैं, जिससे भैया के पैसे बच सकें और वे आगे काम आ जाएँ।

भैया ने कॉलेज में दाखिला लेने के बाद किताबें खरीद ली थीं, पर नोट्स बनाने के लिए कुछ भी नहीं था। इस समय उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि लिखने के लिए कुछ भी नहीं है तो कॉपी कहाँ से लाएँ। उन्होंने कमरे में इधर-उधर देखा। तब उनकी नज़र अलमारी के ऊपरी हिस्से पर पड़ी जहाँ उनकी कुछ पुरानी कॉपियाँ पड़ी थीं। उन्होंने उन कॉपियों को उतारा व पलट कर देखा तो हर कॉपी में आठ-दस पेज खाली मिले।

भैया ने उन पेजों को निकाला व उन्हें सुई-धागे से सिलकर नई कॉपी बना ली। पहले पन्ने को उन्होंने खूबसूरती के साथ अपना नाम लिखकर सजाया। फिर मुझे आवाज़ लगाई – रौनक.....रौनक.....!

मैं मम्मी के साथ सब्ज़ी कटवा रहा था। भैया की आवाज़ सुनकर उनके पास गया। भैया बोले, "देख, कैसी लग रही है?" मैं उनके हाथ की कॉपी को अपने हाथ में लेकर बोला, "भैया बहुत अच्छी है। कहाँ से ली?" भैया बोले, "मैंने पुराने पन्नों को सजाकर बनाई है।" मैं भैया की इस नई कॉपी को हाथ में लेकर देखता रहा। कॉपी बहुत अच्छी लग रही थी।

भैया का यह तरीका मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने भी इस तरीके को अपनाने की सोची। अगर मैं भी भैया की तरह पुराने पन्नों से कॉपी बना लूँ तो बाबा के पैसे बच जाएँगे। यही सोचते-सोचते मैं मम्मी के साथ फिर से सब्ज़ी कटवाने लगा।

रौनक (अंकुर संस्था, दिल्ली की आशा गुप्ता द्वारा संकलित)